रिकॉर्ड:- तू प्यार का सागर है.... ओम शान्ती प्रातःक्लास

10-1-1967

ओम शान्ती कहने से तुम बच्चों के अन्दर भी आना चाहिये ओम शान्ती अर्थात हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं। आत्मा अपना परिचय देती है। सभी आत्मायें एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं। सभी आत्मायें गाड फादर कह याद तो करती हैं नां। सिर्फ जो आत्मायें अथवा जीवआत्मायें हैं वो अपने बाप को जानती नही है। तुम अब जान गये हो। बाप को बच्चों ने जाना है। बाप तब बच्चों को बाप की पहचान मिले। बच्चे ने जन्म लिया और बाप को जान जाते हैं। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है नाम रूप देश काल सब बदल जाता है। आत्मा एक शरीर छोड कर जाकर गर्भ में प्रवेश करती है। फिर बाहर निकलती है शरीर के साथ। तो बाबा, मां कहने लगती है। आत्मा जानती है हमने मेल का रूप या फिमेल का रूप धारण किया है। आत्मा ही आर्गन्स दवारा कहती मैं गुजराती हूँ क्रिश्चियन हूँ। अब तुम्हारी आत्मा कहेगी हम शुद्र थे। अब ब्राह्मण बने हैं। ब्राह्मण से फिर देवता बनते हैं। फिर क्षत्री बनेंगे। फिर वैश्य बनेंगे। आत्मा ही बनती है। अब तुम आत्म अभिमानी बने हो। यह भी तुम जानते हो अभी हम संगम युग पर हैं। बाकी सारी दुनियां कलियुग में है। हम भी पहले कलियुग में थे। अब संगम युग में आये हैं। ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण ब्राह्मणियां हैं। यह भी जानते हो ब्राह्मण तो बहुत हैं। परन्तु वो हैं सब कुख वंशावली। तुम हो मुखवंशावली। तुम खास कहलाती हो ब्रह्मा कुमार कुमारियां। तो तुम सच्चे-2 ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण ब्राह्मणियां ठहरे। वो ब्राह्मण लोग अपने जिसमानी बाप का नाम लेंगे। यह पुआइन्ट बहुत ही सुक्ष्म समझने की है। जो सर्विस पर नही हैं उनकी बुधी में नही बैठेगा। जो सर्विस पर रहते हैं उनको ही धारणा होगी। धारन कर और फिर धारण कराना है। बाप भी सर्विस पर ही तत्पर हैं नां। तुम बच्चे आत्मायें भी इस शरीर दवारा सर्विस पर तत्पर हो। बाप इन शरीरों को नही देखते हैं। शरीर में मोह नही हो सकता। बाप तो आये ही हैं इन शरीरों का विनाश कराये और आत्माओं को वापस ले जाने। तो बाप का आत्माओं पर प्यार है। आत्मअभिमानी बनाते हैं। और तो सभी मनुष्य हैं देहअभिमानी उन सबका शरीरों पर प्यार है। जानते हैं आत्मा ही नालेज धारन करती है। बाप घड़ी-2 कहते हैं अपने को आत्मा समझो। और बाप को याद करो। तुम ब्राह्मणों और उन ब्राह्मणों में कितना फर्क है। तुम हो संगम युग के मुखवंशावली ब्राह्मण। यह यज्ञ है नां। शिव बाबा है ज्ञान का सागर। तो इसको कहेंगे शिव ज्ञान यज्ञ। वो यज्ञ मनुष्य रचते हैं। मण्डप बना कर फिर उसमें यज्ञ रचते हैं। वो हो गया हद का यज्ञ। यह बेहद का यज्ञ बापने रचा है। इस यज्ञ में क्या आहूती पड़नी है? सारी पुरानी दुनिया की। यह सारी दुनिया [illegible] होनी है। कितनी बड़ी आहूती है। तुम्हारे यह शरीर भी भ्रष्टाचार के पैदा हुये हुये हैं नां। यह सब खत्म हो जावेंगे। भ्रष्टाचारी शरीर सतयुग में नही होंगे। तुम अब श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। भ्रष्ठाचार को पाप कहा जाता है। पाप देह अभिमान से होता है। अब तुम बच्चों को कोई भी पाप नही करना है। बाप का बन कर अगर कोई पाप करते हैं तो फिर सौ गुणा दण्ड पड़ जावेगा। पद भी बहुत कम हो जावेगा। पाप करने से दिल अन्दर खाती है। तो लिखते हैं:-बाबा आज हमने पाप किया। बच्चे बहुत सताते थे उनको मारा। बाबा आज स्त्री को थप्पड़ मारा। कोई-2 स्त्रीयां भी लिखती हैं:-बाबा हमने यह पाप किया, पति को उल्टा सुल्टा बोल दिया। कोई-2 स्त्री बड़ी तीखी होती हैं। पुरुष बुधु होते हैं। कहीं फिर स्त्री बुधु पुरुष तीखे होते हैं। तो बाप कहते हैं कोई भी पाप होता है फटसे बताओ। ऐसे भी बच्चे हैं इस समय तक जिनको यह भी पता नही है कि पाप और पुण्य किसको कहा जाता है। पाप करते ही रहते हैं। झूठ बोलना भी पाप है नां। हां कल्याण अर्थ झूठ बोलना नही होता है। बच्चियां छिप कर आती हैं। बहाना हास्पिटल का कर सेन्टर पर आ जाती हैं। वो हुआ कल्याण के लिये झूठ बोलना। यह तो समझ की बात है नां। बहुत हैं जो पाप करते रहते हैं, यहां तो झूठ बोलने की दरकार ही नही है। संगदोष में झूठ बहुत बोलते हैं। बाप समझाते हैं तुम हो ब्राह्मण। शिव बाबा और प्रजापिता ब्रह्मा भी है। तो बच्चे भी हो। पोत्रे और पोत्रियां भी हो। अभी तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है वर्सा पाने का। पुरुषार्थ आत्मा ही करती है। आत्मा बाप को याद करती है। तुमसे कोई भी पूछे बोलो हम आत्मा

पिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां बिलकुल ही अलग हैं। शिव बाबा ब्रह्मा में प्रवेश कर ब्रह्मा मुखवंशावली बनते हैं। ब्रह्मा द्वारा आदी सनातनदेवी देवता धर्म की स्थापना कराते हैं। ब्राह्मण बनने सिवाय हम देवता कैसे बनेंगे। पहले-2 है ब्राह्मण। इस लिये बाबा विराट रूप का चित्र भी बनाये रहे हैं। तमोप्रधानमनुष्य इतने तो बुद्धु बन गये हैं कुछ भी समझते नही हैं। भक्ति मार्ग की जंजीरों में फंसे हुये हैं। जो भी गुरू हैं सब हैं भक्ति दुर्गती मार्ग के। सदगती मार्ग का तो एक ही सतगुरू है। बाकी सब अनेक गुरू हैं दुर्गती वाले। कितने ढेर गुरू हैं? सतयुग में गुरू की दरकार नही। क्योंकि वहां तो सब सदगती में हैं। गुरू चाहिये जहां दुर्गती हो। यहां मनुष्यों को ज्ञान का जरा भी पता नही है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। जो सविर्स पर तत्पर रहते हैं वो हैं सच्चे-2 ब्राह्मण। ब्राह्मण भी दो प्रकार के होते हैं। गोल्डेन, और सीलवर। गोल्डेन कब विकारमें नही जावेंगे। बाप को ही सदैव याद करते रहेंगे। मेरा तो एक बाबा दूसरा नां कोई। वो हुये पक्के गोल्डेन ब्राह्मण। यहां तो कई ऐसे हैं जो सीलवर से भी बदतर। अपनी उन्नती के बदले और ही दुर्गती कर लेते हैं। और ही गिर पड़ते हैं। कुछ भी समझते नही हैं। ब्राह्मणियां जो सैन्टर्स पर हैं उनमें भी सीलवरी और गोल्डेनी हैं। क्यों कि चलन भी ऐसी चाहिये ना। गोल्डेन बन कर राजाई पद पावें। अगर राजाई नही पा सकते हैं तो उनको क्या कहेंगे? सीलवर। प्रजा में तो कोई-2 बहुत धनवान बनते हैं। और वो जाकर थर्ड क्लास दास-दासियां बनेंगे। करके पिछाड़ी में राजा बनेंगे। फर्क तो बहुत हुआ ना। थर्ड ग्रेड दास दासियां बनने से तो प्रजा में शाहुकार बनना अच्छा है ना। बाबा के पास कोई आकर पूछे तो बाबा झटबतावें तुम यह जन्म लेंगे। इस हालत में। वो समय भी जल्दी आवेगा जो तुमको मालूम पड़ता रहेगा कि हम फलाने बनेंगे। स्कूल में कोई पास होते हैं कोई फेल होते हैं। कोई किसी सब्जेक्ट में फेल हो पड़ते हैं। तो दुखदेता है ना। मित्र सम्बन्धी आद कहेंगे तुम ठीक नही पड़े तो यह हाल हुआ। यहां तो है कल्प कल्पान्तर की बात। समझा जावेगा इनकी कल्प कल्पान्तर यही हालत होगी। दिन प्रति दिन मालूम होता जाता है कौन-2 कितने मार्क्स से पास होंगे। सब पता पड़ेगा। यह है वेहद की गाडली यूनिवरसिटी। गीता का भगवान बैठ राज योग सिखाते हैं। कितनी बड़ी वर्ल्ड यूनिवरसिटी है। सारी दुनिया के मनुष्य पावन बनते हैं। यह मनमनाभव का मन्त्र तो सभी आत्माओं के लिये है। सभी आत्माओं को बाप कहते हैं कि मुझ बाप को यादकरो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। इसको कहा जाता है याद वा योग। बाप कहते हैं कई बच्चे पढ़ाई में भले कुछ अच्छे जाते हैं परन्तु योगमें कम रहने कारण विकर्म बहुत होते रहते हैं। देही अभिमानी बन बाप को याद नही करते हैं। तब विकर्म होते हैं। फिर मित्र सम्बन्धी देहन आद ही याद पड़ते रहेंगे। शिव बाबा को याद नही करेंगे। ऐसे ढेर हैं सरिवयों का सरिवाओं में प्यार हो जाता शिव बाबा से प्यार उड़ जाता है। बाप तो सब बातें समझाते हैं। तुम्हारी डबल मिशन है। शुद्र को पहले ब्राह्मण फिर ब्राह्मण को देवता बनाने पड़े। कितनी मेहनत है। बहुत हैं जो श्रीमत पर चलते नही हैं। अपनी मत या सरिवयों की मत पर, भाईयों की मत पर चलते हैं। तो फिर क्या हालत हो जाती है। बाप कहते हैं हम तो श्रीमत देते हैं। मैं ब्राह्मण धर्म और सुर्यवंशी, चन्द्रवंशी धर्म स्थापन करता हूं। जो अच्छी रीत नही पढ़ते हैं वो चन्द्रवंशी में चले जाते हैं। इस रूहानी पढ़ाई में तो बहुत ध्यान देना चाहिये। इसमें सैंटीफिकेशन भी बहुत चाहिये। तन मन धन सब चेंज करना होता है। आत्मा में मन बुद्धी है। आत्मा तमोप्रधानसे सतोप्रधान बनती है। तो फिर तन भी नया मिलता है। शिव बाबा कुछ लेते नही हैं। वो तो हैं दाता। उनका हाथ सदैव (भरतु) ऐसे रहता है। राजा को कब भी पैसे दो तो वो हाथ में नही लेंगे। उनका हाथ कब ऐसे नही होता। बाबा तो अनुभवी हैं ना। 5 गिन्नी जायें जनराना रखते हैं। वो फिर अपने सेक्रेटरी तरफ इशारा करेंगे या तो उनको कहेंगे वापस कर दो। फिर हमको इपने पास लेना पड़े यह कायदा है। कोई लेते हैं कोई नही लेते हैं। दौरे पर जब निकलते हैं तो लाखों नजराना उनको मिलता है। कोई से कुछ भी लेते नही हैं। कोई से तो लाखों रूपयालेते हैं। उनके आगे बहुत नजराना रखते हैं। क्यों कि राजा तो उनके लिये सब कुछ है ना। सतयुग में ऐसे नही होते

होता। बाबा को तो सब अनुभव है ना। रथ तो जरूर अनुभवी चाहिये ना। रथ को कितना श्रृंगारते है। मुसलमान मुसलमान मुसलमान लोग हुसैन के घोड़े को कितना श्रृंगारते है। इनकी वो रसम है। यह भी रथ है ना। राजस्व अश्व मेध ... कहा जाता है। अश्व घोड़े को कहते है। इस घोड़े को स्वाहा करना होता है वो फिर लोग फिर एक दक्ष प्रजापिता का यज्ञ दिखलाते है। उनकी भी एक बड़ी कहानी है। अब प्रजा पिता तो एक ही ब्रह्मा है। उन्होंने फिर दक्ष प्रजापिता दूसरा बना दिया है। तो अब पहले-2 तो यह निश्चय करो कि हम ब्राह्मण सो फिर, देवता बनने है। दैवी गुण धारण करने पड़े। एम आब्जेक्ट तो सामने है। बाप कहते है तुम को ऐसा (लक्ष्य) बनना है। कल्प पहले जो बने थे वो ही बनेंगे। बाप को याद करने बिना तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। प्रजा बनने लिये दान भी करना है। यह भी तो दान करते है ना। ऐसे तो नहीं कि यह ज्ञान नदी नहीं है। ब्रह्म पुत्रा नदी तो सबसे बड़ी है। सिन्ध, ... सरस्वती छोठी है। यह तो बड़ी है ना। परन्तु तुम बच्चों को हमेशा समझना चाहिये कि शिव बाबा सुनाते है। तो शिव ही याद पड़ेंगे। ब्रह्मा को भूल जाओ। अपना नाम छुपा देते हैं। अगर यह कहेंगे हमने मुरली चलाई तो मानेंगे ना। बच्चे के कल्याण लिये कहते है हमेशा समझो शिव बाबा पढ़ाते है। नई-2 पुआइन्टस सुनाते है ना। बच्चे भी सुनाते है विचार सागर मथन करके। तो बच्चों को कभी ... छिपाना नहीं चाहिये। देखते हो ब्राह्मणी में देहअभिमान है तो रिपोर्टस करनी चाहिये। झट लिखना चाहिये नहीं तो सुधरेगी कैसे। पक्की हो जावेगी। फौरन लिखना चाहिये फलानी ऐसी है। तुम ब्राह्मण अपने लिये सूर्य, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हो ना। वो ब्राह्मण कहाँ, तुम ब्राह्मण कहाँ। तुम तो प्रसिद्ध हो ब्रह्मा कुमार कुमारियां। अभी तुम ऐडाप्टिड हुये हो। इनको भूल उनको याद करना है। हम तो शिव बाबा के पोत्रे पोत्रियां है। ब्रह्मा की सन्तान है। गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप की याद में रहना है। वर्सा शिव बाबा से मिलता है। सदैव यह चिन्तन रहना चाहिये तब तुम ऊंच पद पा सकते हो। मनुष्य तो बिलकुल ब्लाइन्ड है। कहते है ब्रह्मा कुमारीयां क्यों कहलाते हो। अरे: प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बने थे ना। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा स्थापना तो जरूर ब्राह्मण ब्राह्मणियां रचेंगे ना। ब्रह्मा दवारा तुमको ऐडाप्ट किया है। कुखवंशावली तो हो नहीं सकते। मनुष्य यह भी समझते नहीं है इतने ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो जरूर बाप भी तो होगा ना। अरे:- प्रजापिता ब्रह्मा की तो तुम भी सन्तान हो ना। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा स्थापना करते है। किसकी? दैवी मनुष्य सृष्टी की। मनुष्य तो मनुष्य ही है। परन्तु बाप कहते है मैं आकर मनुष्यों को देवता बनाता हूँ। शुद्र से ब्राह्मण धर्म में ले आता हूँ। ब्राह्मण सो फिर देवता बनते है। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। तुम भी भूल जाते हो। कोई भी अन्दर आते है बोलो देखो प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां लिखा हुआ है। प्रजापिता तो बाप ठहरा। अरे शादी में बच्चे बच्चियां कैसे बनेंगे। ढेर ब्रह्मा कुमार कुमारियां है। तुम्हारी ... संस्था ही अलग है ब्रह्मा कुमार कुमारियें। सेमीनार में भी ब्राह्मण ब्राह्मणियां ही आते है। शुद्र आ नहीं सकते है। हंस मण्डली में बगले आ जायें तो समझेंगे भी क्या। उनको तो भगा देना चाहिये। बोलो यह हंस मण्डली है। वो है आसुरी सम्प्रदाय यह है दैवी सम्प्रदाय। रात दिन का फर्क है। बच्चों को यह भी समझाते है कब किसीको देख मत अड़ो। थोड़ी बात में बिगड़ो मत। बहुत मीठा बनो। बाबा कोई जास्ती मेहनत थोड़ेई देते है। बच्चों को नालेज धारण करनी है। कोई भी आये बोलो आप कहाँ आये है? यहाँ सब ब्रह्मा कुमार कुमारियां है। ब्रह्मा का नाम कभी सुना है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा दवारा मनुष्य सृष्टी को रचते है। मनुष्य तो है फिर क्या करते है? मनुष्यों को देवता बनाते है। क्यों कि मनुष्य पतित है। देवतायें है पावन। पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाते है। कैसे बनाते है? इसकी भी मिशिनरी है। यह है रूहानी नेचर क्यूअर आत्मा क्यूअर हो जाने से शरीर भी क्यूअर हो जाता है। प्योअर आत्मायें इम्प्योअर दुनिया में रह नहीं सकती है। एक ही घर में स्त्री ब्राह्मण बनती है तो पति शुद्र होता है। बच्ची ब्राह्मणी बाप शुद्र होता है घर में भी युक्ति से रहना है ओम